पाठ 14

आतिथ्य

— श्री भदंत आनंद कौशल्यायन

भारतीय संस्कृति में अतिथि सत्कार की परंपरा को पारिवारिक जीवन के अटूट हिस्से के रूप में देखा जाता है। परन्तु प्रस्तुत आत्मकथा में भदंत आनंद कौशल्यायन ने एक भ्रमणशील व्यक्ति के रूप में एक अपरिचित से गाँव में अपने कटु — मधुर भावानुभूतियों को सहज भाषा में रखा है। एक थका माँदा व्यक्ति साँझ ढलने के पूर्व अपरिचित से भू–भाग में रहने का आश्रय ढूँढने की जल्दबाजी में होता है ऐसा ही कुछ भाव लेखक की यात्रा के पड़ाव को पाने की अपेक्षा और उत्साह को टूटने को लेकर है एक तिरस्कार की चेतना उसके मन में है। लेकिन उसी गाँव में सराय में एक निर्बल से व्यक्ति की आत्मीयता और सेवा भाव ने लेखक को मानवीय अनुभूतियों को समझने के लिए एक नया नजरिया दिया है।

जैसे जीवन पथ पर, वैसे ही साधारण सड़क पर आदमी के लिए अकेले चलना कठिन है। कोई ठहरकर किसी पीछे आनेवाले का साथी हो लेता है, कोई चार कदम तेज चलकर आगे जानेवाले का। लेकिन मुझे उस दिन किसी को आवाज़ देने की भी फुर्सत नहीं थी। किसी साथी की आशामयी प्रतीक्षा में मैं जरा दम लेने के बहाने भी न ठहर सकता था। कारण, उस दिन मेरे सिर पर भूत सवार था। मैंने निश्चय किया था अपने चलने के सामर्थ्य की परीक्षा करने का।

रास्ते चलते प्यास लगती। कुछ देर ठहरकर पानी पीना चाहिए—साधारण नियम है। मैं इस नियम का पालन कहीं नहीं करता। पानी मिलते ही पी लेता और चल देता।

रास्ते चलते से मैं पूछता, ''क्यों भाई, आगे कोई ठहरने लायक गाँव है ?'' लोग किसी गाँव का नाम बतलाते। मैं वहाँ न ठहरता। यही लालच था कि दो–तीन किलोमीटर और हो जाए। आगे एक कस्बे का पता लगा। सोचा, आज वहाँ तक तो जरूर पहुँचेंगे। रात हो चली, पर तब उस कस्बे तक पहुँचने की धुन थी।

किसी ने बताया कि उस कस्बे में एक हाई स्कूल है; उसके हेडमास्टर भले आदमी हैं। यह सुनकर मैंने सोचा कि

यदि मिलेगा तो गरम–गरम पानी से पैर धोऊँगा। हो सकता है, गरम तेल भी मलने को मिल जाए और कहीं गरम दूध मिल गया, तो क्या कहना। लगभग 5–6 किलोमीटर का सफर तय कर चुकने पर थककर चूर हो जाने पर, एक बार बैठकर फिर जल्दी से उठने की आशा मन में न रहने पर, ऐसी इच्छा क्या अनधिकार चेष्टा समझी जाएगी? जो हो, उस रात मैं ऐसा ही हिसाब लगाता हुआ उन हेडमास्टर के बँगले पर जा पहुँचा। बँगला कस्बे के बाहर था। हेडमास्टर साहब के बँगले पर पहुँचकर मैंने वैसे ही दस्तक दी, जैसे कोई अपने घर के दरवाजे पर देता है। हेडमास्टर साहब! हेडमास्टर साहब! कहकर पुकारा। दरवाज़ा खुला। अंदर से एक सज्जन लालटेन लिए हुए निकले। मुझे उस समय अपनी पड़ी हुई थी। मैं उनकी शक्ल–सूरत, कद को क्या निरखता! वे ही मेरी शक्ल को अच्छी तरह पहचानने की कोशिश करते हुए बोले, ''क्या है?''

''मैं एक विद्यार्थी हूँ, ऐतिहासिक महत्व के स्थानों को देखने के विचार से पैदल यात्रा कर रहा हूँ। आज की रात, आज्ञा हो, तो आपके यहाँ काटना चाहता हूँ।''

आशा के ठीक विपरीत जवाब मिला, ''हर्गिज नहीं।'' मेरी सब अक्ल गुम हो गई। अपने को सँभालते हुए मैंने निवेदन किया, ''यहाँ कोई परिचित नहीं, रात अँधेरी है। पहली बार इस बस्ती में आया हूँ। कहाँ जाऊँ?''

''यहाँ आस–पास कई चोरियाँ हो गई हैं। हम अपने घर किसी को नहीं ठहरने देते।''

''आपके बरामदे में पड़े रहने की आज्ञा दे दीजिए। सुबह होते ही मैं अपना रास्ता लूँगा।''

''नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। बस्ती में एक धर्मशाला है, वहाँ चले जाओ।''

''मैं आज बहुत चला हूँ। थककर चूर हो रहा हूँ। एक कदम भी और चलने की सामर्थ्य नहीं है। फिर इस अँधेरे में कैसे, कहाँ धर्मशाला को खोजता फिरूँ?''

''जा रे, इसे धर्मशाला का रास्ता दिखा आ!'' कहकर हेडमास्टर ने एक आदमी को मेरे साथ कर दिया।

थकावट के दुःख से भी अधिक दर्द था मर्माहत अभिमान का। दो–चार कदम चल मैंने उस आदमी से किंचित् रोषभरे शब्दों में कहा, ''जाओ, तुम लौट जाओ। जो बीतेगी सहेंगे। धर्मशाला का रास्ता स्वयं ढूँढ़ लेंगे।''

आदमी शायद यही चाहता भी था। वह लौट गया और मैं अपनी समझ में धर्मशाला की ओर चल दिया, बिना यह जाने कि धर्मशाला किस ओर है। पूरब घूमा, पश्चिम घूमा, दक्षिण घूमा, कहीं कुछ पता न लगा। काफी देर इधर–उधर भटकते रहने पर एक टिमटिमाता हुआ चिराग दिखाई दिया। सोचा, वहाँ कोई होगा, चलकर पूछा जाए; धीरे–धीरे पहुँच ही गया। देखा–दीपक का प्रकाश खिड़की में से आ रहा है। दरवाजे पर फिर दस्तक देनी पड़ी। दरवाज़ा खुलते ही आवाज़ आई, ''क्या है?'' जब तक मैं उत्तर दूँ, मुझे सुनाई पड़ा, ''अरे! तुम फिर आ गए?'' मैंने गर्दन उठाई। वही हेडमास्टर साहब थे, जिनके घर से थोड़ी ही देर पहले अपना–सा मुँह लेकर विदा हुआ था। बात यह थी कि इधर–उधर घूमते मुझे दिशा–भ्रम हो गया और मैं कोल्हू के बैल की तरह, जहाँ से चला था वहीं फिर आ पहुँचा।

''दौड़ो! दौड़ो! देखो, इसे अभी निकाला था, अब यह पिछवाड़े की तरफ से आया है।'' हेडमास्टर साहब की चिल्लाहट सुनकर दो ही चार मिनट में आस–पास के लोगों ने मुझे घेर लिया। कोई कहता, ''पुलिस को बुलाओ।'' कोई कहता, ''नहीं, थाने में ही ले चलो।'' जो कुछ न कहता, वह चार चपत लगाने का प्रस्ताव तो कर ही देता। मेरी अक्ल हैरान थी, क्या करूँ, क्या न करूँ। बुरा फँसा था। कैसे विश्वास दिलाता कि मैं चोर नहीं हूँ। लोग कहते, देखिए न अंधेर है, अभी–अभी निकाला था, फिर इतनी जल्दी हिम्मत की है। उन्हें क्या मालूम, जो उनके लिए अंधेर है, वही मेरे लिए महाअँधेर है। विपत्ति पड़ने पर, कहते हैं, अक्ल मारी जाती है। लेकिन जब आदमी को और कोई सहारा नहीं रहता, तब बुद्धि ही उसके काम आती है। तब मैंने स्वयं को दीवार के सहारे खड़ा करने की कोशिश करते हुए कहा, ''देखिए, मैं दूर से चलकर आया हूँ। थकान से चकनाचूर हूँ। आप मुझे बैठने के लिए जगह दीजिए और फिर ठंडे पानी का गिलास। फिर बैठकर कृपया मेरी बात सुन लीजिए। यदि आप लोगों को विश्वास हो जाए कि मैं चोर नहीं हूँ, तो कृपया एक बार फिर अपना आदमी दे दीजिए, मुझे धर्मशाला का रास्ता दिखा देने के लिए और विश्वास न हो तो थाने में भेज दीजिए या और जो चाहे कीजिए। वे लोग बुरे आदमी न थे। और, बुरे आदमी में क्या भलाई नहीं होती ? मेरी बात सुन ली गई। एक स्टूल बैठने के लिए दिया गया और पानी का एक गिलास भी। मैंने स्थिरता से बैठकर हल्के–हल्के पानी पिया और अपना थैला खोलकर उसमें से दो चिट्ठियाँ निकालीं। दोनों परिचय पत्र थे। एक था ग्वालियर पुरातत्व विभाग के निदेशक के नाम और दूसरा निज़ाम हैदराबाद के प्रधान मंत्री महोदय के नाम। दोनों से मेरा साधारण परिचय था और यदि वे मुझ अज्ञानी यात्री की कुछ सहायता कर सकें तो धन्यवाद के दो शब्द।

हाँ, तो मैंने परिचय पत्र दिखाते हुए कहा, ''यदि ये पत्र किसी चोर के पास हो सकते हैं तो मैं चोर हूँ और यदि इन पत्रों के रखने वाले के चोर न होने की कुछ संभावना है तो मैं चोर नहीं हूँ।'' लोगों की आपस में फुसफुस हुई और चाहे मैं कोई भी होऊँ निश्चय हुआ, मुझे धर्मशाला ही भेजने का। वही आदमी मेरे साथ कर दिया गया और उसके पीछे–पीछे मैं ऐसे चलने लगा जैसे अखाड़े में हारा हुआ कोई पहलवान। धर्मशाला पहुँचा तब पता लगा कि दरवाज़ा बंद हो चुका है और अब किसी तरह नहीं खुल सकता।

''यही धर्मशाला है'', कहकर वह आदमी मुझे छोड़कर चलता बना। अब क्या करूँ–कहाँ जाऊँ? धर्मशाला में बाहर की ओर एक बरामदा था। मैंने उसी में रात काटने की सोची। पास में कपड़ा काफी नहीं था। तो क्या? सर्दी जोरों से पड़ रही थी। तो क्या ? और कोई चारा नहीं था। अँधेरे में अंदाज करके मैं एक कोने में बैठ जाना चाहता था कि आवाज़ आई, ''कौन है?'' मैंने कहा, ''मुसाफिर।''

''इतनी रात गए आए हो?''

''हाँ भाई, आज ऐसी ही बीती।''

''इधर आ जाओ, उधर हवा लगेगी।'' कहते हुए उस अपरिचित आवाज़ ने मुझे अपने पास के कोने में बुला लिया – ''तुम कहाँ से?''

''तुम कहाँ से?'' मैंने पूछा

"हम तो भिखमंगे हैं, दिखाई नहीं देता।"

अंधे भिखमंगे के पास लेटने का जीवन में पहला अवसर था। "कितने पैसे मिले, क्या खाने को मिला?" .... कुछ ऐसे ही सवाल मैंने पूछे। लेकिन मैं तो व्यग्र था अपनी सुनाने के लिए, उसे सुननेवाला मिला था पहले–पहले मुझे वही अंधा।

अथ से इति तक मैंने कह सुनाई। उस सहानुभूति के साथ, जो एक दुखिया को दूसरे दुखिया से होती है, वह अंधा मेरी बात सुनता रहा। राम कहानी खत्म हुई, तब अँधेरे में टटोलते हुए उसने पूछा, "कहाँ हैं तुम्हारी टाँगें? उन्हें जरा दबा दूँ।"

मैंने कहा "न यार, रहने दो।"

"अच्छा, यह बताओ तुम्हारे पास कोई कपड़ा है?"

"है।"

"कहाँ? मुझे दो।"

मेरे पास वही एक साफा था, गज–डेढ़ गज का टुकड़ा। मैंने दे दिया। अंधे ने अपने हाथों से मेरी टाँगों को टटोला और नीचे से ऊपर तक कसकर बाँध दिया। उसने कहा, "अब थोड़ी देर ऐसे ही बैठे रहो।" गहरी सहानुभूति दिखाने वाले की आज्ञा का उल्लंघन आसान नहीं होता। मैं मूर्तिवत् बैठा रहा। थोड़ी देर बाद उसने मेरी टाँगें खोल दीं। रुका हुआ खून तेजी से दौड़ता मालूम हुआ, थकावट जाती रही। बातें करते–करते नींद आ गई। सुबह उठा, तब देखा–मेरा साथी मुझसे पहले ही उठकर चला गया था।

शब्दार्थः– **आतिथ्य**– आवभगत, खातिरदारी, **ऐतिहासिक**– इतिहास संबंधी. **व्यग्र**– व्याकुल, **उल्लंघन**– नियम या विधि विरुद्ध, **किंचित**– अल्प, थोड़ा, तनिक, **मर्माहत**– मर्म को चोट पहुँचना, हृदय को पीड़ा पहुँचना, **पुरातत्व**– प्राचीनकाल संबंधी विद्या, **अखाड़ा**– कुश्ती लड़ने की जगह, मल्ल भूमि, **चकनाचूर**– चूर–चूर, खंड–खंड।

अभ्यास

पाठ से

1. लेखक के द्वारा की गई पदयात्रा का कारण क्या था ?
2. हेडमास्टर जी ने लेखक को अपने घर पर न ठहरने की क्या वजह बताई ?
3. थकावट के दुःख से भी अधिक दर्द था मर्माहत अभिमान का' लेखक द्वारा इस तरह कहे जाने का क्या कारण हो सकता है?
4. थके हुए लेखक के मन में हेडमास्टर जी के घर ठहरने को लेकर कौन–कौन सी भावनाएँ उठ रही थीं ?

5. हेडमास्टर से मिलने से पूर्व और उसके बाद में लेखक के मनोभावों में क्या परिवर्तन हुआ?
6. परिचय–पत्र देखकर हेडमास्टर के विचारों में किस प्रकार का परिवर्तन हुआ होगा? सोचकर लिखिए।
7. लेखक चोर नहीं था, इस बात का विश्वास दिलाने के लिए उसने क्या किया?
8. लेखक के अनुसार जीवन के पथ पर अकेले चलना क्यों कठिन है ?
9. ''गहरी सहानुभूति दिखाने वाले की आज्ञा का उल्लंघन आसान नहीं होता'' इस पंक्ति के द्वारा लेखक अपने दुखिया भिक्षुक मित्र के किन भावों को बताना चाहता है?
10. ''उन्हें क्या मालूम कि जो उनके लिए अँधेर है, वह मेरे लिए महाअँधेर है।'' लेखक ने महाअँधेर किसे कहा है?

पाठ से आगे

9HH44H

1. पाठ में लेखक ने लिखा है कि 'बुरे आदमी में क्या अच्छाई नहीं होती? अर्थात हर व्यक्ति में अच्छाई और बुराई दोनों होती है। आप स्वयं की बुराई और दूसरों की अच्छाई पर समूह में बात करते हुए बातचीत के प्रमुख बिन्दुओं का लेखन कीजिए।
2. जब सभी लेखक की अवहेलना कर रहे थे तब धर्मशाला के गलियारे में भिक्षुक ने उसकी सहायता और सेवा की। भिक्षुक के इस व्यवहार को पढ़ते–समझते हुए आपके मन में कौन से भाव उत्पन्न हुए? उसे एक अनुच्छेद में लिखिए।
3. पाठ के अनुसार लेखक को लोगों ने रात में चोर समझकर घेर लिया। अपने आप को इस समस्या से उबारने के लिए उसे जब कोई सहारा नहीं मिला तब उसकी अपनी ही बुद्धि काम आई है। आप इस तरह की परिस्थिति में होंगे तो क्या करेंगे? अनुमान कर के और अपने मित्रों से बात कर लिखिए।

भाषा से

9HQZ65

1. 'अनधिकार' शब्द 'अन्' उपसर्ग के साथ 'अधिकार' शब्द के मेल से बना है जिसका अर्थ होता है 'बिना अधिकार के'। आप भी 'अन्' उपसर्ग से बने दस शब्दों का निर्माण कीजिये।
2. राम कहानी सुनाना, कोई चारा न होना, अपना रास्ता लेना, अथ से इति तक, अपना सा मुँह लेकर रह जाना, अक्ल गुम हो जाना, कोल्हू

का बैल आदि मुहावरे हैं, जो इस पाठ में आए हैं। इन मुहावरों के अर्थ लिखिए और वाक्यों में प्रयोग भी कीजिये।

3. (क) एक 'स्टूल' बैठने के लिए दिया गया और पानी का एक गिलास।

   (ख) जब आदमी को और कोई सहारा नहीं रहता तब बुद्धि ही उसके काम आती है।

   उपर्युक्त दोनों वाक्यों में **'और'** शब्द के अलग–अलग अर्थ हैं। प्रथम वाक्य में 'और' का अर्थ **जुड़ाव** जबकि दूसरे में **'अन्य'** है। आप भी इसी तरह 'और' शब्द के भिन्न–भिन्न प्रयोग करते हुए पाँच–पाँच अन्य वाक्यों की रचना कीजिए।

4. (1) सुबह होते ही मैं अपना रास्ता लूंगा।

   (2) मैं धीरे–धीरे पहुँच ही गया।

   पाठ से उद्‌धृत उपर्युक्त उदाहरणों में **'ही'** निपात का प्रयोग हुआ है। कुछ अव्यय शब्द वाक्य में किसी शब्द या पद के बाद लगकर उसके अर्थ में विशेष प्रकार का बल ला देते हैं, इन्हें 'निपात' कहा जाता है। इसी तरह **भी, मात्र, तक, तो, भर** आदि भी निपात है। आप भी इनका प्रयोग करते हुए वाक्य बनाइए।

5. प्रातःकाल अपने साथी को न पाकर लेखक के मन में क्या विचार उठे होंगे? कल्पना करके लिखिए।

6. लेखक के स्थान पर यदि आपके साथ यह घटना घटित होती तो आप इसे अपने किसी मित्र सहेली को पत्र के रूप में कैसे लिखते/लिखतीं ?

योग्यता विस्तार

9HZV7S

1. यात्रा–वृतांत साहित्य की एक विधा है। इस विधा के बारे में शिक्षक से चर्चा कर समझ बनाइए और उस पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

2. आतिथ्य को भारतीय संस्कृति में महान दर्जा प्राप्त है। आपके यहाँ भी अतिथि आते होंगे उनके साथ हम क्या व्यवहार करते हैं और उनके साथ कैसा व्यवहार होना चाहिए? कक्षा में चर्चा लिखिए।

3. यात्रा में कई तरह के अनुभव होते हैं। अपनी किसी यात्रा का अनुभव लिखिए और कक्षा में सुनाइए।